ऐसे साधु सुगुरु.....

ऐसे साधु सुगुरु कब मिलि हैं।।टेक।।

आप तरैं अरु पर को तारैं, निष्पृही निर्मल हैं।।

ऐसे साधु सुगुरु कब मिलि हैं।।१।।

तिल तुष मात्र संग नहिं जिनके, ज्ञान–ध्यान गुण बल हैं।।

ऐसे साधु सुगुरु कब मिलि हैं।।२।।

शांत दिगम्बर मुद्रा जिनकी, मन्दर तुल्य अचल हैं।।

ऐसे साधु सुगुरु कब मिलि हैं।।३।।

'भागचन्द' तिनको नित चाहें, ज्यों कमलनि को अलि हैं।।

ऐसे साधु सुगुरु कब मिलि हैं।।४।।